[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7456 **IC**

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य में अमीर खुसरो के योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विद्यापति 'भक्त कवि हैं या शृंगारी'? विचार कीजिए। (12)

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'मधुमालती' में वर्णित प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए। (12)

P.T.O.

Scanned by CamScanner

3. 'मीरा की उपासना 'माधुर्य' भाव की थी' – इस कथन के आधार पर मीरा की भक्ति की विषेशताएँ लिखिए।

अथवा

सूरदास की भक्ति–भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. तुलसीदास की समन्वय भावना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तुलसीदास की काव्य–कला पर विचार कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) कबीर कर पकरैं अंगुरी गिनैं, मन धावै चहुं वोर।
जाहि फिरायां हरि मिलै, सो भया काठ कठोर।।
कबीर केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूडै सौ बार।
मन कौं काहे न मूंडिए, जामैं बिशै बिकार।।

अथवा

नांक सरूप न बरनै पारौं। तीनिउं भुवन हेरि कै हारौं।
कीर ठोर औ खरग कै धारा। तिलक फूल मैं बरनि न पारा।
उदयागिरि जौ कहौं तौ नाहीं। ससि सूरुज दुइ बाद कराहीं।
निकट न कोउअ संचरै पारा। निसि दिन जियै सो बास अधारा।
केहि दै जोर पटतरौं नासा। ससि सूरज जेहि करहिं बतासा।
नांक, सरूप सोहागिनि केहि लै लावौं भाउ।
जा कहं ससि सूरुज निसि बासर ओसारीं सारहिं बाउ। (8)

Scanned by CamScanner

(ख) ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग बराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी ।।
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं।
सो संपदा बिभीशन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं ।।
तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो ।।

अथवा

धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचौ सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीतको सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ ।।

(7)

निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) हेरी म्हा तो दरद दिवाणाँ म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय ।।टेक।।
घायल रो गत घायल जाण्याँ, हिबड़ो अगण सँजोय।
जौहर की गत जौहरी जाण्यां, क्या जाण्याँ जिण खोय।
दरद को मारयां दर दर डोल्याँ वैद मिल्या णा कोय।
मीराँ री प्रभु पीर मिटाँगा जब वैद साँवरो होय ।। (प्रेम की पीर)

P.T.O.

Scanned by CamScanner

अथवा

अति मलीन वृशभानु-कुमारी

हरि स्रम-जल भीज्यौ उन-अंचलए तिहिं लालच न धुवावति सारी

अध मुख रहति अनत नहिं चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी

छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ।।

हरि सँदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक बिरहिनि, दूजे अलि जारी

सूरदास कैसें करि जीवें ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ।।

(भाव सौंदर्

(ख) काहे ही नलनी तूं कुम्हिलांनीं,

तेरे ही नालि सरोवर पांनीं ।।टेक।।

जल मैं उतपति जल मैं बास, जल मैं नलनीं तोर निवास ।

ना तलि तपति न ऊपरी आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि ।

कहै कबीर जे उदिक समांन, ते नहीं मूए हमारे जान ।।

(प्रतीकात्मकत

अथवा

चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय ।

ईह मारे करतार कै रैन बिछोही होय ।।

सेज सूनी देख के रोऊं दिन-रैन ।

पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चौन ।। (रहस्य भावन

Scanned by CamScanner